बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'
कवि एवं लेखक
एम॰ए॰; बी॰एड॰; आई॰जी॰डी॰; पीजीडीजेएमसी

206, टाइप-2, आई॰ आई॰ टी॰, कानपुर, भारत
मो॰ 91-9956171230, फो॰ 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

निर्दयी नेतृत्व

जबसे हम आजाद हुए, क्या खोया और क्या पाया है |
किसान खेत में भूखा है, मजदूर बहुत अकुलाया है ||

मंहगी हुई दाल और रोटी, दूध के क्या है कहने,
सूखा मां का आंचल भी अब, बच्चे लगे बिलख्ननें,
क्या शासन सत्ता वालों ने, दर्द जान ये पाया है,
जबसे हम आजाद हुए..... ||

कैसे ब्याह होय बेटी का, बेटे को कैसे काम मिले,
रीति-रिवाजों की चिन्ता में, गरीब बाप हर समय जले,
सामाजिक ठेकेदारों ने , दर्द समझ कब पाया है,
जबसे हम आजाद हुए..... ||

लूट-लूट सब भरे तिजोरी, क्या नेता क्या अधिकारी,
अय्याशी में लुटा रहे हैं, धन सारा ये सरकारी,
खून चूसता जनता का, जो गद्दी पर लद पाया है ,
जबसे हम आजाद हुए..... ||

जाति-धर्म,भाषा औ क्षेत्र का, बटवारा करवाते है,
लूटपाट, दंगाफसाद और मारकाट करवाते है,
वोटो के चक्कर में अफजल, को दामाद बनाया है,
जबसे हम आजाद हुए..... ||